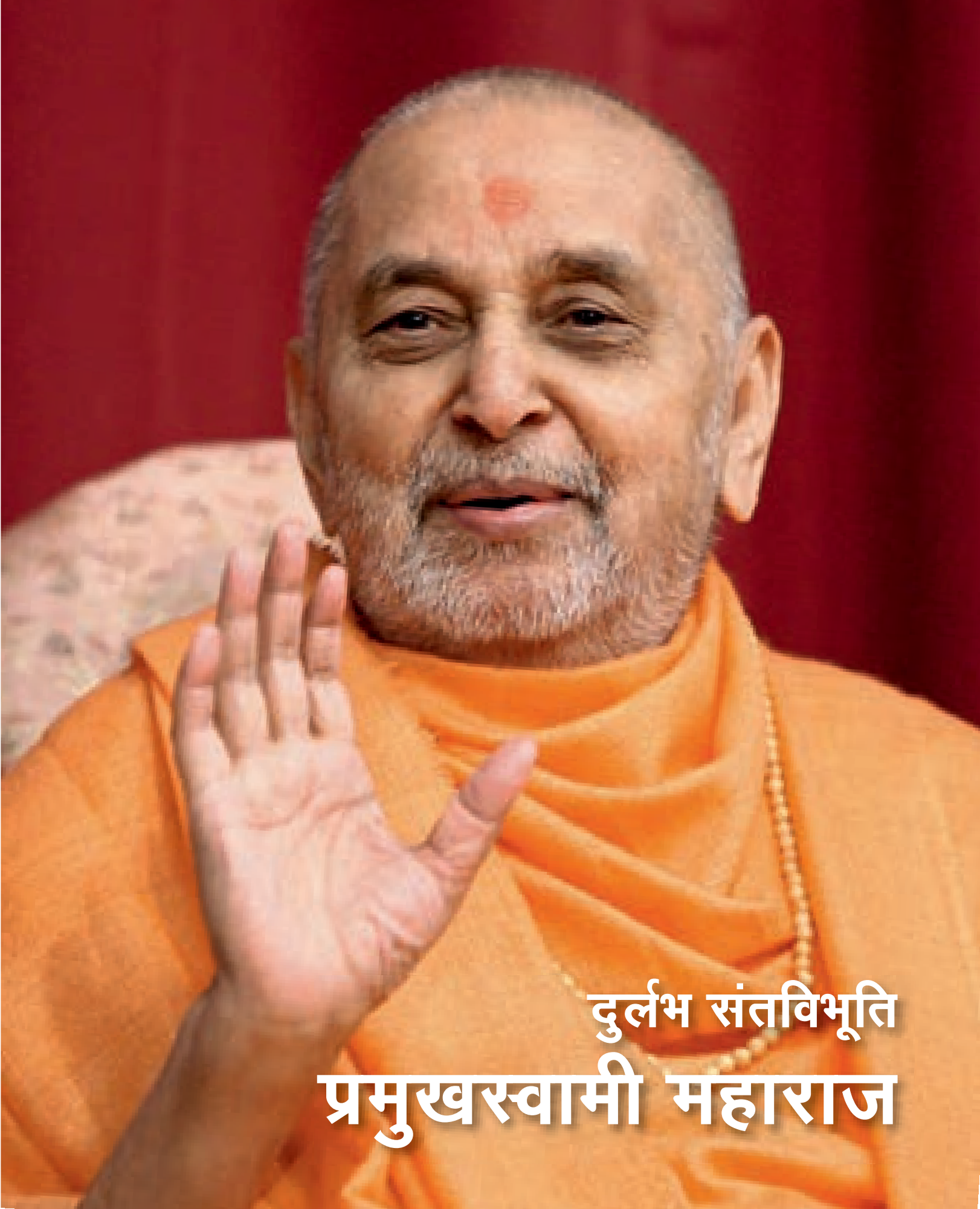
दुर्लभ संतविभूति
प्रमुखस्वामी महाराज

भगवान श्रीस्वामिनारायण तथा अनुगामी गुणातीत गुरुपरम्परा

ब्रह्मस्वरूप
भगतजी महाराज

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण
अक्षरब्रह्म श्रीगुणातीतानंद स्वामी

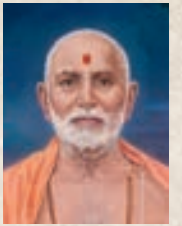

ब्रह्मस्वरूप
शास्त्रीजी महाराज

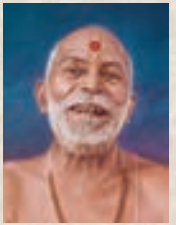

ब्रह्मस्वरूप
योगीजी महाराज

ब्रह्मस्वरूप
प्रमुखस्वामी महाराज

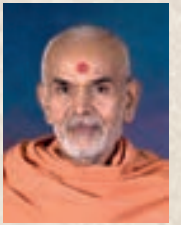

प्रकट ब्रह्मस्वरूप
महंतस्वामी महाराज

गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः।
जनो जानन्निदं सत्यं मुच्यते भवबन्धनात्॥

दुर्लभ संतविभूति
प्रमुखस्वामी महाराज

प्रकाशक
स्वामिनारायण अक्षरपीठ
शाहीबाग रोड, अहमदाबाद - 380 004.

द्वितीय आवृत्ति : सितम्बर 2016
प्रत : 25,000 (कुल प्रत : 30,000)

दुर्लभ संतविभूति

प्रमुखस्वामी महाराज

एक पवित्र, परोपकारी, परमार्थी एवं परमात्मामय आध्यात्मिक पुरुष अर्थात् प्रमुखस्वामी महाराज! विश्वशांति के लिए सदैव कटिबद्ध तथा विश्व के सर्वाधिक प्रभावशाली धर्मगुरुओं में आदरणीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रमुखस्वामीजी ने 'दूसरों की भलाई में ही अपना भला है...!' जीवनसूत्र के साथ अनेक प्रकार की सेवाओं में अपना समग्र जीवन समर्पित कर दिया है।

भगवान श्रीस्वामिनारायण की गुणातीत गुरु परम्परा के पांचवें गुरुदेव, इन महान संत का जन्म एक किसान परिवार में 7 दिसम्बर, 1921 को गुजरात में वडोदरा के समीप चाणसद गाँव में हुआ था। किशोर अवस्था में भगवान श्रीस्वामिनारायण की आध्यात्मिक परम्परा के तीसरे गुरुदेव ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के पवित्र व्यक्तित्व से वे आकर्षित हुए। 18 वर्ष की उम्र में उन्होंने शास्त्रीजी महाराज के चरणों में अपना जीवन समर्पित कर दिया और दीक्षा प्राप्त करके सन् 1940 में वे नारायणस्वरूपदास स्वामी बन गए। जन्मजात विनम्रता, निरन्तर सेवामग्नता, आदर्श साधुता तथा लोगों के कल्याण की नि:स्वार्थ भावना से वे सभी के प्रिय बन गए। सन् 1950 में मात्र 28 वर्ष की उम्र में वे बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के प्रमुख बने, तभी से वे 'प्रमुखस्वामी महाराज' के प्रिय नाम से लोगों के प्रिय बने हुए हैं।

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के अनुगामी ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की छत्रछाया में रहकर उन्होंने अनेक प्रकार की सेवाएँ कीं।

सन् 1971 में योगीजी महाराज के आध्यात्मिक अनुगामी के रूप में वे लाखों भक्तों के गुरुपद पर बिराजमान हुए।

मात्र एक धर्मगुरु के रूप में ही नहीं, परन्तु असंख्य लोगों के आदर्श प्रेरणामूर्ति के रूप में तथा समाज के एक महान हितचिंतक सेवक के रूप में उनका व्यक्तित्व विशिष्ट प्रभाव फैलाता रहा है। अंसख्य लोगों के तारणहार स्वामीश्री जीवन के नौ-नौ दशकों तक लोक कल्याण हेतु नि:स्वार्थ भाव से प्रचंड पुरुषार्थ करते रहे हैं। उच्च आध्यात्मिक गुणों से सम्पन्न इन महान संत ने असंख्य लोगों के जीवन में आध्यात्मिक प्रेरणाओं का सिंचन करके, उनका जीवन परिवर्तित कर दिया है।

भेदभाव से परे इन वात्सल्य मूर्ति संत ने हर किसी को समता के भाव से चाहा है। अंतर्राष्ट्रीय, आध्यात्मिक-सामाजिक संस्था बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के सूत्रधार स्वामीश्री की अहंशून्य तथा परोपकारी प्रतिभा से प्रभावित होकर विश्व के अनेक धर्मगुरु तथा अंतर्राष्ट्रीय महानुभावों ने उन्हें एक महान संतविभूति के रूप में हृदय से सराहा है। अनेक मुमुक्षुओं ने उनके सान्निध्य में परब्रह्म की दिव्य अनुभूति की है, उच्च आध्यात्मिक शिखर प्राप्त किया है और अनेक कर रहे हैं।

इन महापुरुष की जन्म शताब्दी के पर्व पर उनके दिव्य व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करके हरकोई पवित्र प्रेरणा प्राप्त कर सके, उस उद्देश्य से इस छोटी सी पुस्तिका को प्रकाशित करते हुए हम आनन्द का अनुभव करते हैं।

- स्वामिनारायण अक्षरपीठ

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे परमार्थी संत, जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से जनकल्याण के लिए निरन्तर पुरुषार्थ किया है।

शरीर की परवाह किए बिना अनेक कष्टों को सहकर **प्रमुखस्वामी महाराज ने 17,000 से** भी अधिक गाँवों-नगरों में जीवन भर विचरण किया है। जहाँ कोई मार्ग नहीं, ऐसे गाँवों तथा लाखों घरों को उन्होंने पावन किया है; कठिनाइयों में साथ एवं मार्गदर्शन दिया है। **स्वामीश्री शांति तथा सुख को बाँटनेवाले एक दुर्लभ शांतिदूत हैं...**

पिछड़ों की झोपडियों में तारणहार...

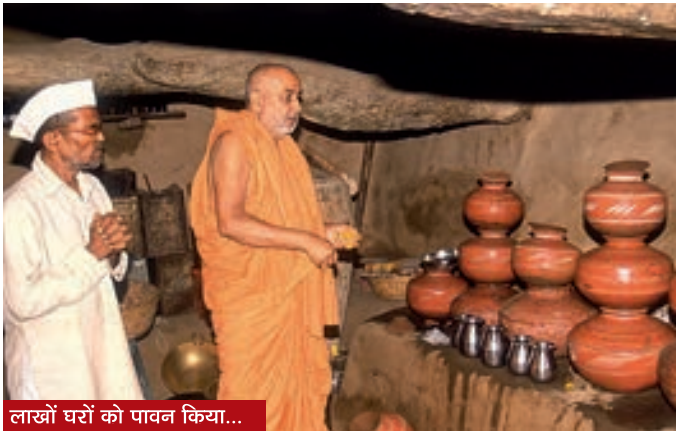

लाखों घरों को पावन किया...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे करुणामूर्ति संत, जिन्होंने लाखों लोगों से व्यक्तिगत मिलकर पवित्र प्रेरणाएँ दी हैं...

प्रमुखस्वामी महाराज ने जीवनभर लोगों की पीड़ाओं को सुना है। रोज़ सैकड़ों लोगों से व्यक्तिगत मिलकर वे उनके सुख-दुःख के साथी बने हैं; उन्हें **सहायता, मार्गदर्शन, धैर्य तथा आशीर्वाद** दिया है; **लगभग सात लाख** पत्र लिखकर अनेक को सच्चा मार्ग दिखाया है। **स्वामीश्री सही अर्थ में सबके निःस्वार्थ मार्गदर्शक हैं।**

असंख्य की पीड़ा को सुना...

असंख्य के दिलों में खुशियाँ दीं...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे महान सर्जक, जिन्होंने
देश-विदेश में श्रद्धा और शांति के धामों की रचना की है...

प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा रचे गए 1100 से भी अधिक मंदिर सत्संग, सेवा तथा आध्यात्मिक मूल्यों के **ऊर्जाकेन्द्र** के रूप में लाखों को पवित्र प्रेरणाएँ देते हैं। दिल्ली तथा गांधीनगर में रचे गए **भव्य अक्षरधाम** भारतीय संस्कृति की सुगंध प्रसारित करते हैं...
स्वामीश्री दुर्लभ तथा आदर्श रचनात्मक कार्यों के प्रेरणामूर्ति हैं...

बी.ए.पी.एस. मंदिर, सेलवास

1100 से भी अधिक मंदिरों की प्रतिष्ठा...

विदेशों में भव्य मंदिर

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे आध्यात्मिक ज्योतिर्धर, जिन्होंने लगभग 1000 सुशिक्षित युवकों को दीक्षा देकर संत परम्परा को उज्ज्वल किया है...

प्रमुखस्वामी महाराज ने नवयुवकों को आध्यात्मिक प्रेरणा देकर आत्मकल्याण तथा लोकसेवा के मार्ग पर प्रेरित किया है। उनके आध्यात्मिक जीवन से आकर्षित होकर प्रशिक्षित संत अनेक सेवा-क्षेत्रों में निःस्वार्थ भाव से अनन्य योगदान दे रहे हैं।
स्वामीश्री त्याग एवं सेवा के लिए समर्पित संतसमाज के सर्जक हैं...

प्रशिक्षण साधुता-विद्वत्ता का

संतों द्वारा जनजागृति

लोकसेवा में संतशक्ति

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे अद्वितीय पथप्रदर्शक, जिन्होंने विश्वभर में बाल-युवा-महिला केन्द्रों की स्थापना करके असंख्य को सत्संग-अमृत पिलाया है...

प्रमुखस्वामी महाराज ने देश-विदेश में कुल **9,500 से** भी अधिक बाल-युवा केन्द्रों तथा **9000 से** भी अधिक पुरुष-महिला सत्संगकेन्द्रों को स्थापित करके, सभी के जीवन में आध्यात्मिकता एवं संस्कार का सिंचन किया है। हजारों युवकों को रचनात्मक मार्ग पर मोड़ा है। **स्वामीश्री एक विराट आध्यात्मिक समाज के निर्माता हैं...**

जगह-जगह सत्संगकेन्द्रों द्वारा प्रेरणा...

दुर्लभ बाल-युवा सत्संग प्रवृत्तियाँ...

लाखों बालकों-युवकों के आत्मीय...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे आधुनिक शिक्षण-प्रदाता, जिन्होंने संस्कारयुक्त शिक्षा की गंगा प्रवाहित करके विद्यार्थियों के जीवन को प्रकाशित किया है...

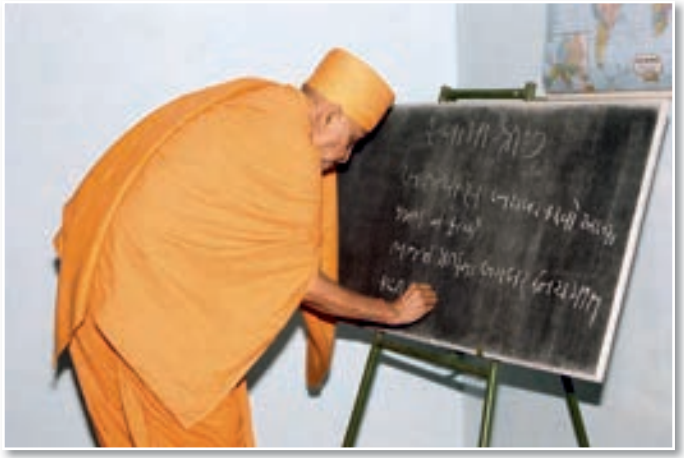

प्रमुखस्वामी महाराज ने 31 शिक्षण-संकुलों को विकसित करके शिक्षा-संस्कार की प्राचीन परम्परा को जीवंत किया है। आपदाग्रस्तों के लिए **75 विद्यालयों का** नवनिर्माण, 23 से अधिक शैक्षणिक संकुलों में अनुदान, प्रतिवर्ष **5000 से** भी अधिक छात्रों को आर्थिक सहायता आदि द्वारा **वे लाखों विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता बने हैं...**

31 विशाल शिक्षण-सुंकल...

विद्यालयों द्वारा संस्कार-शिक्षा...

अद्वितीय आवासीय गर्ल्स स्कूल...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे दयामूर्ति संत, जिन्होंने असंख्य लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु स्वास्थ्य-सेवाओं का यज्ञ प्रारम्भ किया है...

प्रमुखस्वामी महाराज ने 7 मल्टी स्पेशियालिटी अस्पतालों की स्थापना की है। उसके अतिरिक्त 12 निःशुल्क चल-चिकित्सालयों द्वारा **48 लाख** से अधिक रोगियों का इलाज कराया है। **48 लाख** सी.सी. रक्तदान, निःशुल्क रोगनिदान यज्ञों तथा विभिन्न स्वास्थ्य-सेवाओं द्वारा **स्वामीश्री ने समाज के स्वास्थ्य का रक्षण किया है...**

जगह-जगह रोगनिदान यज्ञ...

आधुनिक अस्पतालों द्वारा सेवाकार्य...

चल-चिकित्सालयों द्वारा रोगनिदान...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे करुणामूर्ति संत, जिन्होंने निःस्वार्थभाव से अनेक प्राकृतिक संकटों में सेवा करके लाखों को नवजीवन दिया है...

प्रमुखस्वामी महाराज ने प्राकृतिक आपदाग्रस्त गुजरात, महाराष्ट्र, कच्छ, उड़ीसा एवं नेपाल, अफ्रीका, अमेरिका तक राहतसेवाएँ प्रदान करके लोगों को नवजीवन प्रदान किया है। आपदाग्रस्त 25 गाँवों को दत्तक लेकर उनका नवनिर्माण करके, हज़ारों को छत्र प्रदान किया है।

स्वामीश्री परदुःख से द्रवित होकर सेवा करनेवाले दुर्लभ परमार्थी संत हैं...

आपदाग्रस्तों को पुनः व्यवस्थित किया...

आपदाग्रस्त गाँवों का पुनर्निर्माण...

उड़ीसा में विद्यालय का नवनिर्माण...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे कुशल प्रयोजक, जिन्होंने समाज को संस्कृति के हित के लिए अनेक जन-जागृति अभियान प्रारम्भ किए हैं...

40 लाख लोगों को व्यसनमुक्ति की प्रेरणा देता व्यसनमुक्ति आंदोलन हो, स्वच्छता एवं साक्षरता अभियान हो, वनवासी उत्कर्ष तथा पर्यावरण-रक्षा अभियान हो, प्रमुखस्वामी महाराज ने अनेक जागृति अभियानों को प्रारम्भ करके समाज तथा संस्कृति के हित का रक्षण किया है।

स्वामीश्री समाज-जागृति के दुर्लभ प्रहरी हैं...

वनवासियों के तारणहार...

स्वच्छता अभियान में स्वयंसेवक...

हजारों समर्पित स्वयंसेवक...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

ऐसे प्रेरणापुरुष, जिनकी प्रेरणा से बी.ए.पी.एस. द्वारा महिला-उत्कर्ष की ज्योति के उजाले अनेक क्षेत्रों में फैले हैं...

प्रमुखस्वामी महाराज ने अपनी साधुता की मर्यादा को अक्षुण्ण रखकर, भगवान श्रीस्वामिनारायण द्वारा प्रकट की गई महिला-उत्कर्ष की प्रवृत्ति को बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा अनेक क्षेत्रों में फैलाया है। उनकी प्रेरणा से संचालित हज़ारों बालिका-किशोर-युवती-महिलाकेन्द्र देश-विदेश में सेवारत हैं...

अद्‌भुत युवती प्रशिक्षण शिविर...

संस्कारप्रेरक विराट बालिका प्रवृत्ति...

अद्वितीय प्रतिभाविकास प्रवृत्तियाँ...

परमात्मा के साक्षात्कारयुक्त गुरुदेव, इसीलिए
उनके सान्निध्य में परमात्मा के आनन्द की अनुभूति होती है...

कर्मठ बनकर निरन्तर ऐसी अनेक प्रकार की सेवाओं में लीन होने के बावजूद **प्रमुखस्वामी महाराज** निरन्तर भगवानमय रहते हैं। प्रभु को अर्पण किए बिना उन्हें जल की एक बूंद भी ग्राह्य नहीं। उनकी समग्र पूंजी या उनका सर्वस्व एक भगवान हैं। सचमुच **पराभक्तिमय स्वामीश्री का हृदय परमात्मा का अखंड निवासस्थान है...**

परब्रह्म की सेवा में सेवकभाव...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे गुणातीत संत, जो दुर्लभ आध्यात्मिक गुणों के धारक हैं, अध्यात्म के शिखर पर बिराजमान हैं...

प्रमुखस्वामी महाराज भगवद्गीता कथित स्थितप्रज्ञ, समद्रष्टा एवं गुणातीत संत हैं; संत के शास्त्र कथित दिव्य गुणों से अलंकृत हैं। सुख-दुःख में स्थिर, मान-अपमान में धीर, शरीर के भावों से परे तथा अद्वितीय क्षमाधर्म के सर्वोत्तम धारक हैं।

स्वामीश्री वास्तव में सर्वोच्च आध्यात्मिक मूल्यों के मूर्तिमान स्वरूप हैं...

शारीरिक कष्टों में भी निजानंदमग्न...

अहित करनेवाले के भी हितकारी...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे अहंशून्य संत,
जो स्वयं को परमात्मा का सेवक मानते हैं...

प्रमुखस्वामी महाराज ने समग्र जीवन दूसरों के हित के लिए समर्पित किया है। निःस्वार्थभाव से उनके द्वारा किए गए अनेक कार्य सभी को प्रभावित करते हैं। युनो से लेकर गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड्स, केनेडा तथा ब्रिटिश पार्लामेन्ट तक सर्वत्र उनका अभिनंदन किया गया है, **फिर भी उनका यश प्रभु को अर्पण करके वे उनसे मुक्त रहते हैं...**

युनो में संबोधन करते समय...

गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड्स द्वारा सम्मान...

एक ऐसे समद्रष्टा महापुरुष, जो सांसारिक भेदभाव से परे हैं, वे समता के भाव से सभी को चाहते हैं...

गरीब हो या अमीर, सामान्य किसान हो या कोई राष्ट्रनायक, अनपढ़ हो या विद्वान, सवर्ण हो या पिछड़ा, प्रमुखस्वामी महाराज के पास सभी भेद-रेखाएँ समाप्त हो जाती हैं। वे समान भाव से सभी पर वात्सल्य एवं आशीर्वाद की वर्षा करते हैं; क्योंकि

स्वामीश्री मानव अथवा जीवप्राणीमात्र में परमात्मा को देखते हैं...

ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स के साथ...

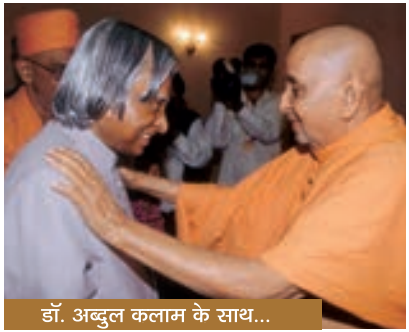

डॉ. अब्दुल कलाम के साथ...

सामान्य के साथ भी असामान्य...

श्री दलाई लामा के साथ...

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

एक ऐसे आदरणीय महापुरुष, जिन्होंने बाल-वृद्ध से लेकर विश्व के अनेक महानुभावों के हृदय में आदर प्राप्त किया है...

आज के युग में संतोष, सहिष्णुता एवं निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा प्रदान करनेवाला श्रेष्ठ उदाहरण है : पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज।

- पूज्य दलाई लामा (बौद्ध धर्मगुरु)

प्रमुखस्वामी महाराज जंगम नारायण हैं, संतरत्न हैं। उनका तेजस्वी व्यक्तित्व नीतिमय आदर्श जीवन का दिव्य प्रकाश फैलाता है।

- पूज्य स्वामी चिदानंदजी महाराज (दिव्यजीवन संघ)

बुद्ध-तीर्थंकर, राम-कृष्ण आदि संतों-अवतारों ने भारत को संवर्धित किया है। इस युग में भगवान की कृपा से ऐसे महापुरुष मिले हैं - प्रमुखस्वामी महाराज। **- पूज्य जैनाचार्य सुशीलमुनिजी**

कदाचित् भगवान अपने अत्यन्त प्रिय व्यक्तियों की सूची बनाने बैठे, तो उस सूची में प्रमुखस्वामी महाराज का नाम निश्चय ही प्रथम होगा !

- पूज्य स्वामी विबुधेशतीर्थजी महाराज (मध्वाचार्य)

स्वयं पर प्रमुखस्वामीजी के प्रभाव को मैं कैसे कहूँ, वास्तव में उन्होंने मेरा परिवर्तन कर डाला है। वे मेरे जीवन के आध्यात्मिक आरोहण की सर्वोच्च तथा अंतिम मंजिल हैं।

- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (भू.पू. राष्ट्रपति)

प्रमुखस्वामी महाराज की विनम्रता, जीवप्राणीमात्र के प्रति सहानुभूति मेरा हृदय स्पर्श कर गई है।

- श्री प्रिन्स चार्ल्स (ब्रिटिश राजकुमार, लंदन)

प्रमुखस्वामी महाराज ने अपना समग्र जीवन शांति, संवादिता एवं समाज की सेवा के लिए समर्पित किया है। मुझे उनसे गहरी प्रेरणा मिली है।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी

प्रमुखस्वामी महाराज की आँखें शुद्ध भावना से छलकती दिखती हैं। उनमें मैंने एक ऐसा व्यक्ति देखा है, जो राग-द्वेष से परे है।

- श्री बिल क्लिन्टन (पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति)

प्रमुखस्वामी इस देश के महान आध्यात्मिक नेता है। मैं उनसे कईबार मिला हूँ और प्रत्येक बार मुझे शांति का अनुभव हुआ है।

- डॉ. चिदम्बरम् (अणुवैज्ञानिक)

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज की अनुभववाणी

- लोहे की प्रकृति डूबने की है, परन्तु वह काष्ठ के साथ जुड़ जाए, तो पानी में तैरता है। उसी तरह भगवान और संत के साथ आत्मबुद्धि हो जाए, तो भवसागर पार कर जाएँ।
- जिसने हमें शरीर, बुद्धि और शक्ति दी है और जिसके कारण पढ़-लिखकर डिग्रियाँ ली, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, उद्योगपति बने; उस भगवान के लिए समय नहीं दे सकते? भगवान ने जैसा हमें दिया है, वैसा अन्य कोई नहीं दे सकता। अतः उसका उपकार न भूलो। नित्य उसकी प्रार्थना और पूजा हेतु समय निकालो।
- बालक आपकी संपत्ति हैं। हमारे धर्म और संस्कार सुरक्षित रहें, उसका ध्यान प्रत्येक माता-पिता को रखना है। यदि आप उन्हें संस्कार नहीं दे सकते, तो संतति और संपत्ति दोनों को खो देंगे।
- किसी जीव को मारकर जीवन जीना, कोई जीवन नहीं। हिंसा पाप है, उसका फल दुःख है, अहिंसा पुण्य है, उसका फल सुख है।
- दूसरों के सुख में अपना सुख है। दूसरों की भलाई में अपना भला है। दूसरों के उत्कर्ष में अपना उत्कर्ष है।
- परस्पर प्रेम फैलाए, वही धर्म; निःस्वार्थ भाव से दूसरों के लिए मिटना ही वैराग्य है। हर कार्य में प्रभु के कर्तापन का ध्यान भक्ति है।
- जीवन में संयम तथा आत्मज्ञान आए, वही सच्चा विकास।
- ध्येय में दृढ़ता और विश्वास ही प्रगति है। ध्येय में शंका और विलास ही अवनति है।

ISBN:978-81-7526-790-9

मूल्य : ₹ 5-00

(मूल कीमत ₹ 10-00 में से स्वामिनारायण अक्षरपीठ के अनुदान से रियायती मूल्य)